पवन प्रवाह
www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com

website: www.pawanprawah.com
पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

हम पूर्व अंक-11 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स, कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में प्रयागराज तीर्थ स्थल की भूमिका के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण को जानने का प्रयास करेंगे।

भाग-12

गतांक से आगे

मात्रत्मक विधि

इसमें प्रयाग के समीप मिलने वाले प्रमुख तीर्थ केन्द्रों के मध्य की दूरी के आधार पर प्रामाणिक दूरी का निर्धारण कर सीमांकित किया गया है। इस विधि के अन्तर्गत प्रयाग के चतुर्दिक स्थित केन्द्रों की दूरी का मानक विचलन आकलित किया गया है। इसके लिए 18 केन्द्रों का चयन किया गया है। इनकी दूरी इलाहाबाद मुख्यालय केन्द्र से ली गयी है। इन केन्द्रों का नाम और दूरी क्रमशः कौशाम्बी-58 किमी0, श्रंग्वेरपुर-35 किमी0, कड़ा-66 किमी0, गढ़वा-55 किमी0, चित्रकूट-130 किमी0, विठूर-222 किमी0, अयोध्या-167 किमी0, मैहर-180 किमी0, विंध्याचल-93 किमी0, वाराणसी-135 किमी0, सारनाथ-145 किमी0, लखनऊ-213 किमी0, अरैल-11 किमी0, झूंसी-9किमी0, लाक्षागृह-45 किमी0, कानपुर-200 किमी0, भीटा-24 किमी0 तथा खैरागढ़-62 किमी0 है। इन केन्द्रों की दूरी का मानक विचलन=70 किमी0 आता है।

इस प्रकार 70 किमी0 की दूरी की त्रिज्या से खींची गयी परिधि द्वारा निर्धारित क्षेत्र प्रयाग के धार्मिक/सांस्कृतिक परिप्रदेश के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि परम्परागत विधि, अनुभवात्मक या गुणात्मक विधि तथा मात्रात्मक विधि द्वारा परिसीमित क्षेत्र गंगाघाटी के जनप्रदेश में स्थित हिन्दू जनमानस को एक सूत्र में बांधा है। इनमें स्थित तीर्थस्थल एवं सांस्कृतिक केन्द्र देश को एकता के सूत्र में बांधने में सदा सहायक रहे हैं। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में वैष्णव, शैव तथा बौद्ध धर्म पल्लवित, पुष्पित होकर एक दूसरे के पूरक हुए हैं। शक्ति की उपासना ने इसे भारतीय जनमानस का प्रमुख आधार प्रदान किया है। प्रयाग की धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक चेतना मानव समाज को एक आधार प्रदान करती है।

कुंभ पर्व की पौराणिक कथाएँ

कुंभ पर्व के आयोजन को लेकर दो-तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इंद्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर संपूर्ण देवता दैत्यों के साथ संधि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। अमृत कुंभ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इन्द्रपुत्र जयन्त अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयंत का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयंत को पकड़ा। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा।

इस परस्पर मारकाट के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश से अमृत बूँदें गिरी थीं। उस समय चंद्रमा ने घट से प्रस्त्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से घट की रक्षा की। कलह शांत करने के लिए भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव-दानव युद्ध का अंत किया गया।

अमृत प्राप्ति के लिए देव-दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरन्तर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं। अतएव कुम्भ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुंभ देवलोक में होते हैं, जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहाँ पहुँच नहीं है।

जिस समय में चंद्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, उस समय कुंभ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में, जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी, वहाँ-वहाँ कुंभ पर्व होता है।

कुंभ में स्नान का महत्व

सहस्त्र कार्तिके स्नानं माघे स्नान शतानि च।
वैशाखे नर्मदाकोटिः कुंभस्नानेन तत्फलम्।
अश्वमेघ सहस्त्राणि वाजवेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूम्याः कुंभस्नानेन तत्फलम्।

कुंभ में किए गए एक स्नान का फल कार्तिक मास में किए गए हजार स्नान, माघ मास में किए गए सौ स्नान व वैशाख मास में नर्मदा में किए गए करोड़ों स्नानों के बराबर होता है। हजारों अश्वमेघ, सौ वाजपेय यज्ञों तथा एक लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो पुण्य मिलता है, वह कुंभ में एक स्नान करने से प्राप्त हो जाता है।

ज्योतिषीय महत्व

पौराणिक विश्वास जो कुछ भी हो, ज्योतिषियों के अनुसार कुंभ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुंभ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है ?कि अपनी अंतरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध कुंभ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है। हालाँकि सभी हिंदू त्योहार समान श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाए जाते है, पर यहाँ अर्ध कुंभ तथा कुंभ मेले के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है।

अर्ध कुम्भ

'अर्ध' शब्द का अर्थ होता है आधा और इसी कारण बारह वर्षों के अंतराल में आयोजित होने वाले पूर्ण कुम्भ के बीच अर्थात पूर्ण कुम्भ के छः वर्ष बाद अर्ध कुंभ आयोजित होता है। हरिद्वार में पिछ्ला कुंभ 1998 में हुआ था।

हरिद्वार में 26 जनवरी से 14 मई 2004 तक चला था अर्ध कुंभ मेला, उत्तरांचल राज्य के गठन के पश्चात ऐसा प्रथम अवसर था। इस दौरान 14 अप्रैल 2004 पवित्र स्नान के लिए सबसे शुभ दिवस माना गया।

इतिहास

10,000 ईसापूर्व (ईपू) - इतिहासकार एस बी राय ने अनुष्ठानिक नदी स्नान को स्वसिद्ध किया।

600 ईपू - बौद्ध लेखों में नदी मेलों की उपस्थिति।

400 ईपू - सम्राट चन्द्रगुप्त के दरबार में यूनानी दूत ने एक मेले को प्रतिवेदित किया।

ईपू 300 ईस्वी - रॉय मानते हैं कि मेले के वर्तमान स्वरूप ने इसी काल में स्वरूप लिया था। विभिन्न पुराणों और अन्य प्राचीन मौखिक परम्पराओं पर आधारित पाठों में पृथ्वी पर चार विभिन्न स्थानों पर अमृत गिरने का उल्लेख हुआ है। सर्व प्रथम आगम अखाड़े की स्थापना हुई कालांतर मे विखंडन होकर अन्य अखाड़े बने

547 - अभान नामक सबसे प्रारम्भिक अखाड़े का लिखित प्रतिवेदन इसी समय का है।

600 - चीनी यात्री ह्यान-सेंग ने प्रयाग (वर्तमान प्रयागराज) पर सम्राट हर्ष द्वारा आयोजित कुम्भ में स्नान किया।

904 - निरन्जनी अखाड़े का गठन।

1146 - जूना अखाड़े का गठन।

1300 - कानफ्टा योगी चरमपंथी साधु राजस्थान सेना में कार्यरत।

1398 - तैमूर, हिन्दुओं के प्रति सुल्तान की सहिष्णुता के दण्ड स्वरूप दिल्ली को ध्वस्त करता है और फिर हरिद्वार मेले की ओर कूच करता है और हजारों श्रद्धालुओं का नरसंहार करता है। विस्तार से - 1398 हरिद्वार महाकुम्भ नरसंहार

1565 - मधुसूदन सरस्वती द्वारा दसनामी व्यवस्था की लड़ाका इकाइयों का गठन।

1678 -प्रणामी संप्रदाय के प्रवर्तक, महामति श्री प्राणनाथजीको विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक घोषित।

1684 - फ़्रांसीसी यात्री तवेर्निए नें भारत में 12 लाख हिन्दू साधुओं के होने का अनुमान लगाया।

1690 - नासिक में शैव और वैष्णव साम्प्रदायों में संघर्ष; 60,000 मरे।

1760 - शैवों और वैष्णवों के बीच हरिद्वार मेलें में संघर्ष; 1,800 मरे।

1780 - ब्रिटिशों द्वारा मठवासी समूहों के शाही स्नान के लिए व्यवस्था की स्थापना।

1820 -हरिद्वार मेले में हुई भगदड़ से 430 लोग मारे गए।

1906- ब्रिटिश कलवारी ने साधुओं के बीच मेला में हुई लड़ाई में बीचबचाव किया।

1954 - चालीस लाख लोगों अर्थात भारत की 1: जनसंख्या ने इलाहाबाद में आयोजित कुम्भ में भागीदारी की; भगदड़ में कई सौ लोग मरे।

1989 - गिनिज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने 6 फ़रवरी के इलाहाबाद मेले में 1.5 करोड़ लोगों की उपस्थिति प्रमाणित की, जोकी उस समय तक किसी एक उद्देश्य के लिए एकत्रित लोगों की सबसे बड़ी भीड़ थी।

1995 - इलाहाबाद के ÷अर्धकुम्भ÷ के दौरान 30 जनवरी के स्नान दिवस को 2 करोड़ लोगों की उपस्थिति।

1998 - हरिद्वार महाकुम्भ में 5 करोड़ से अधिक श्रद्धालु चार महीनों के दौरान पधारे; 14 अप्रैल के एक दिन में 1 करोड़ लोग उपस्थित।

2001 - इलाहाबाद के मेले में छः सप्ताहों के दौरान 7 करोड़ श्रद्धालु, 24 जनवरी के अकेले दिन 3 करोड़ लोग उपस्थित।

2003 - नासिक मेले में मुख्य स्नान दिवस पर 60 लाख लोग उपस्थित।

2004 - उज्जैन मेला; मुख्य दिवस 5, 19, 22, 24 अप्रैल और 4 मई।

2007 - इलाहाबाद में अर्धकुम्भ। पवित्र नगरी इलाबाद में अर्धकुम्भ का आयोजन 3 जनवरी 2007 से 26 फ़रवरी2007 तक हुआ।

2010 - हरिद्वार में महाकुम्भ प्रारम्भ। 14 जनवरी 2010 से 28 अप्रैल 2010 तक आयोजित किया जाएगा। विस्तार से - 2010 हरिद्वार महाकुम्भ

2015 - नाशिक और त्रयंबकेश्वर में एक साथ जुलाई 14, 2015 को प्रातः 6:16 पर वर्ष 2015 का कुम्भ मेला प्रारम्भ हुआ और सितम्बर 25,2015 को कुम्भ मेला समाप्त हो जायेगा।

2016 - उज्जैन में 22 अप्रैल से आरम्भ था।

2019 - प्रयागराज में अर्धकुम्भ रहा।

2022 - हरिद्वार में कुम्भ लगेगा।